भेलूपुर के जैन मंदिर
तीर्थंकर पार्श्वनाथ की तीर्थ स्थली

तीर्थंकर पार्श्वनाथ की तीर्थ स्थली भगवान पार्श्वनाथ का जन्म स्थान भेलूपुर माना जाता है। यहाँ भी तीन मंदिर हैं- दो दिगम्बर जैन मंदिर एवं एक श्वेताम्बर जैन मंदिर। स्याद्वाद विद्यालय के पुस्तकालय में सामायिक नित्य प्रतिक्रमण पाठ है, जो सन् 1562 ई. में लिखा गया, में भेलूपुर में पार्श्वनाथ के मंदिर का वर्णन है। यह भेलूपुर में जैन मंदिर होने का सर्वप्रथम वर्णन है।

पूर्व में सैंकड़ो वर्षों से दिगम्बर एवं श्वेताम्बर मंदिर एक ही परिसर में था तथा न्यायालय में विवाद चल रहा था। सन् 1985 में आपसी समझौता के द्वारा मंदिर की भूमि को बांटकर अलग-अलग दिगम्बर एवं श्वेताम्बर मंदिर बने।

दिगम्बर जैन मंदिर- समाज के फैंसले के बाद अलग से एक विशाल दिगम्बर जैन मंदिर बना है। इस मंदिर की खुदाई के समय पुरातात्विक अवशेष गुप्तकाल व उसके बाद के मिले हैं, जो इस मंदिर के प्रांगण में सुरक्षित रखे हैं एवं गुप्तकाल से ईसा की पाँचवीं शताब्दी तक की है। इस मंदिर के पीछे मुनियों की समाधि भी स्थित है। विशाल धर्मशाला भी यहाँ है। यह मंदिर ऊपर की मंजिल पर है। नीचे पुस्तकालय, वाचनालय एवं सभाकक्ष हैं।

श्वेताम्बर जैन मंदिर- नया विशाल मंदिर कलात्मक तपगच्छ शिल्पकला का सोमपुरा शैली में बना है। इस मंदिर के दांये व पीछे की तरफ खतर गच्छ दादा गुरुओं का मंदिर बनाया गया है। इस मंदिर के साथ विशाल धर्मशाला भी बनी है।

खड्गसेन उदयराज का दिगम्बर जैन मंदिर- यह मंदिर श्री खड्गसेन उदयराज ने सन् 1868 ई. में निर्माण करवाया। यह मंदिर मौजूदा तीनों मंदिरों में सबसे पुराना है। इसमें तीन वेदियाँ हैं तथा एक पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की तीन फुट ऊँची मूर्ति विराजमान है, जो सिंघई गोत्रिय श्री फूलचन्द जी ने स्थापित की थी। आचार्य सन्मति सागर संघ का चौमासा वर्ष 1999 में हुआ था और उसी समय उनके गुरु आचार्य आदिसागर व आचार्य महावीर कीर्ति की मूर्तियाँ भी यहाँ स्थापित हुई थीं।